bihar board class 8th sanskrit notes | अस्माकं देशः

पाठ 3 – अस्माकं देशः

अस्माकं देशः

(भूतकाल की क्रियाएँ)

[हमारा देश भारत .....यथार्थ निरूपण है ।)

(उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् । वर्षं तद् भारतं प्रातुः भारती यत्र सन्ततिः ।)

अर्थ – जो समुद्र के उत्तर और हिमालय से दक्षिण का भू – भाग है वह देश भारत कहलाता है । यहाँ की संतान भारतीय कहलाते हैं ।

अस्माकं देशः .....तीर्थ यात्रिकाः ।

अर्थ – हमारा देश भारतवर्ष कहलाता है । प्राचीन काल से ही इस देश की प्राकृतिक सम्पन्नता साहित्यिक योगदान और सांस्कृतिक सम्पन्नता आश्चर्य पैदा करने वाला है । यहाँ ही वेदों की उत्पत्ति सात सिन्धु , झेलम , चेनाब , रावी , व्यास , सतलज और सरस्वती) नदियों वाला प्रदेश में हुई । जहाँ की भौतिक और आध्यात्मिक चिन्तन अद्भुत था । उत्तर भारत में महाकाव्यों का , पुराणों का और शास्त्रों की व्यापकता दक्षिण देश भाग को भी अपने प्रकाश में लाया । वहाँ भी " शिलप्पदिकारम् " (तमिल भाषा का एक महाकाव्य का नाम है) आदि अनेक ग्रन्थ प्राचीन काल से ही तमिल साहित्य का गौरव को बढ़ा रहा है । सम्पूर्ण भारत को सांस्कृतिक एकता प्रदान करने में पुराणों का योगदान नहीं भुलाने योग्य है । इस समय भारत के लोगों में धर्मस्थलों या तीर्थ यात्रा के प्रति जो लगाव देखा जाता है वह निश्चित रूप से पुराण – साहित्यों की देन है । दक्षिण के निवासी बदरीनाथ और केदारनाथ की यात्रा करते हैं तो उत्तर के निवासी रामेश्वरम् और कन्याकुमारी तीर्थ जाना चाहते हैं । उसी प्रकार द्वारिका , कामाख्या आदि स्थानों में तीर्थयात्री जाते हैं ।

अस्य देशस्य नद्यः .....समस्या अत्र नासीत् ।

अर्थ – इस देश की नदियों को पवित्र जलवाली मानी जाती है । यहाँ के पर्वतों को पवित्र कहा जाता है । यहाँ के वृक्ष पूजे जाते हैं । प्रकृति के प्रति भारतीयों का आकर्षण आश्चर्य पैदा करने वाला था । पूज्यनीय होने के कारण प्रकृति को प्रदूषित करना पाप माना जाता था । इसीलिए पर्यावरण की कोई भी समस्या यहाँ नहीं थी ।

अस्मिन् देशे विज्ञान स्यादि..... अन्यदेशेष्वपि गता ।

अर्थ – इस देश में विज्ञान की भी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा थी । वास्तु और शिल्पीकार लोग बड़े – बड़े मंदिरों का निर्माण करते थे । सुन्दर – सुन्दर भवन बनाये जाते थे । आकाशीय ग्रहपिण्डों को ज्योतिषियों के द्वारा अध्ययन किये जाते थे । यहाँ के चिकित्सा शास्त्र भी प्रगतिशील थे । गणित शास्त्र में शून्य की कल्पना भारत के द्वारा ही किया गया जिससे दशमलव की गणना का प्रारम्भ और अन्य देशों में भी गया ।

भारतस्य प्राचीन गौरवं .....नेतारः सन्ति ।

https://www.evidyarthi.in/

अर्थ – भारत का प्राचीन गौरव मध्यकाल में पराधीन (गुलाम) होने के कारण कुछ लुप्त जैसा हो गया । किन्तु वर्तमान में कुछ शिक्षित लोग हैं जो आधुनिक विज्ञान में भी अपनी प्रतिभा दिखा रहे हैं । सी ० बी ० रमण , जगदीश चन्द्रवसु , मेघनाथ साह , होमी जहांगीर भाभा , विक्रम साराभाई इत्यादि वैज्ञानिक लोग आधुनिक भारत के गौरव को बढ़ाने वाले हैं । उसी प्रकार महात्मा गाँधी जैसे कर्मवीर , रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे साहित्यकार अरविन्द जैसे दार्शनिक , राधाकृष्णन जैसे शिक्षक , राजेन्द्र प्रसाद जैसे स्थिर बुद्धि वाले इत्यादि लोग वर्तमान भारत के प्रतिष्ठित नेता लोग हैं ।

सम्प्रति देशस्य .....गणनीयो वर्त्तते ।

अर्थ – आजकल देश का विकास सभी क्षेत्रों में हो रहा है । कृषि क्षेत्र में नये – नये प्रयोग , उत्तम संचार साधन अन्तरिक्ष क्षेत्र में भी विशिष्ट योगदान , स्वास्थ्य के प्रति जन – जागरण , चिकित्सा सुविधाओं की वृद्धि , सर्वशिक्षा अभियान इत्यादि उल्लेखनीय हैं । सब प्रकार हमारे देश को संसार के अग्रणियों में गिना जायेगा ।

शब्दार्थ –

उत्तरम् = उत्तर दिशा में । यत् = जो । समुद्रस्य = समुद्र का / के / की । हिमाद्रेः = हिमालय के । दक्षिणम् = दक्षिण दिशा में । वर्षम् = देश , वर्ष , वृष्टि । भारतम् = भारत (नामक देश) । प्राहुः = कहते हैं । भारती – भारतीय । यत्र = जहाँ । संततिः = संतान । अस्माकम् = हमारा , हमलोगों का । इति = ऐसा । कथ्यते = कहा जाता है । प्राचीनकालात् = प्राचीन काल से । अस्य = इसका । प्राकृतिकी = प्राकृतिक । समृद्धिः = सम्पन्नता । साहित्यिकम् = साहित्य सम्बन्धी । सांस्कृतिकम् = सांस्कृतिक , संस्कृति से सम्बन्धित । वैभवम् = समृद्धि , सम्पन्नता । आश्चर्यकरम् = आश्चर्य उत्पन्न करने वाला । बभूव = था / हुआ । अत्रैव (अत्र + एव) = यहीं । वेदानाम् =वेदों का । आविर्भावः = जन्म , उत्पत्ति । सप्तसिन्धुप्रदेशे =सप्तसैन्धव क्षेत्र में (सिन्धु , झेलम , चेनाब , रावी , व्यास , सतलज व घग्घर (सरस्वती) सात नदियों वाला क्षेत्र) । जातः = हुआ । भौतिकम् = भौतिक , सांसारिक । आध्यात्मिकम् = आध्यात्मिक (आत्मा से सम्बन्धित) । चिन्तनम् = चिन्तन , मनन । अद्भुतम् = अद्भुत (जो आज से पहले न देखा गया हो) । उत्तरभारते = उत्तर भारत में । महाकाव्यानाम् = महाकाव्यों का । पुराणानाम् = पुराणों का । शास्त्राणाम् = शास्त्रों का । व्यापकता = विस्तार । दक्षिणम् = दक्षिण को । देशभागमपि (देशभागम् + अपि) = देश के भाग को भी । स्वप्रकाशे = अपने प्रकाश में आनयत् = लाया । तत्रापि (तत्र + अपि) = वहीं । शिलप्पदिकारम् = शिलप्पदिकारम् (तमिल साहित्य का एक महाकाव्य) । प्रभृतयः = इत्यादि । प्राचीनकालतः = प्राचीन काल से । तमिलसाहित्यस्य = तमिल साहित्य का । गौरवम् = गौरव को । वर्धितवन्तः = बढ़ाये हुए हैं । सम्पूर्णस्य = सम्पूर्ण का , समस्त का । भारतस्य = भारत का । सांस्कृतिके = सांस्कृतिक में । एकत्वे = एकता मैं । अविस्मरणीयम् = नहीं भुलाये जाने योग्य (है) । इदानीम् = इस समय । जने – जने = जन – जन में , लोगों में । धर्मस्थलानाम् = धर्म स्थलों का / की / के । तीर्थयात्रार्थम् =तीर्थ यात्रा के लिए । योऽभिनिवेशः (यः + अभिनिवेशः) = जो लगाव । दृश्यते = देखा जाता है । नूनम् = निश्चित रूप से । पुराणसाहित्यकृतम् = पुराण – साहित्य के द्वारा किया गया । दक्षिणस्य निवासी = दक्षिण (भारत) के रहनेवाले । बदरीकेदारयात्राम् = बद्री (नाथ) और केदार (नाथ) की यात्रा (को) । करोति = करता है । उत्तरस्य = उत्तर का । रामेश्वा कन्याकुमारी तीर्थं च = रामेश्वर और कन्याकुमारी तीर्थ (को) । गन्तुमिच्छति (गन्तुम् + इच्छति) = जाना चाहता है । एवमेव (एवम् + एव) = उसी प्रकार । द्वारिकाकामाख्यादिषु = द्वारिका , कामाख्या आदि में । स्थलेषु = स्थलों में / पर । तीर्थयात्रिकाः = तीर्थयात्री । नद्यः । नदियाँ । पुण्यतोयाः = पवित्र जलवाली । मन्यन्ते = माने जाते हैं , मानी जाती हैं । कथ्यन्ते = कहे जाते हैं । पूज्यन्ते = पूजे जाते हैं । प्रकृति प्रति = प्रकृति के प्रति । भारतीयानाम् = भारतीयों का । आकर्षणमासीत् (आकर्षणम् + आसीत्) = आकर्षण था । पूजनीयत्वात् = पूज्य होने (के कारण) से । प्रकृतेः प्रकृति का । प्रदूषणम् = प्रदूषण । मन्यते स्म = माना जाता था । अतएव = इसीलिए । पर्यावरणस्य = पर्यावरण की । कापि = कोई भी । अत्र = यहाँ । नासीत् (न + आसीत्) = नहीं था । अस्मिन् देशे = इस देश में । विज्ञानस्यापि (विज्ञानस्य

https://www.evidyarthi.in/

+ अपि) = विज्ञान का भी । महती = बड़ी । प्रतिष्ठा = इज्जत , सम्मान । वास्तुशिल्पिनः = वास्तुकार – शिल्पकार (भवन का नक्शा बनानेवाले) । विशालानि मन्दिराणि = बड़े मन्दिरों को । निर्मान्ति स्म = बनाते थे । भवनानि = भवन , मकान । भव्यानि = भव्य , सुन्दर , आकर्षक । क्रियन्ते स्म = बनाये जाते थे । आकाशपिण्डानि = आकाशीय पिण्डों (ग्रह , उपग्रह , नक्षत्रादि) को । ज्योतिर्विद्भिः = ज्योतिषियों के द्वारा । अधीयन्ते स्म = अध्ययन किये जाते थे । चिकित्साशास्त्रमपि (चिकित्साशास्त्रम् + अपि) = चिकित्सा शास्त्र भी । प्रगतिशीलम् प्रगतिशील , लगातार आगे बढ़नेवाला । गणितशास्त्रे = गणितशास्त्र में । शून्यस्य = शून्य की , (का , के) । भारतेन = भारत के द्वारा । कृता = किया गया । येन = जिससे । दशमलवगणना = दशमलव की गणना (गिनती) । प्रारभत = आरम्भ हुआ । अन्यदेशेष्वपि (अन्यदेशेषु + अपि) = दूसरे देशों में भी । गता = गयी । किञ्चित् = कुछ । तिरोहितम् = लुप्त , गायब । पराधीनतया = पराधीनता से , गुलामी से , दूसरे के अधीन रहने से । सम्प्रति = इस समय । शिक्षिताः = शिक्षित , पढ़े – लिखे लोग । सन्तः = होते हुए । आधुनिके = आधुनिक में , आज के समय में । विज्ञानेपि (विज्ञाने + अपि) = विज्ञान में भी । प्रतिभाम् = प्रतिभा को । दर्शयन्ति = दिखाते हैं । आधुनिकभारतस्य = आधुनिक भारत के । गौरववर्धकाः = गौरव , प्रतिष्ठा , सम्मान बढ़ानेवाले । सदृशः = (के) समान । स्थितप्रज्ञः = जिसने आत्मतत्त्व को जानकर स्थिरता प्राप्त कर ली है (समसुखदु : खः) । इत्यादय = इत्यादि । वर्तमानभारतस्य = वर्तमान भारत के । गौरवरूपाः = गौरवरूप , प्रतिष्ठापूर्ण । नेतारः = नेता (बहुवचन) । सार्वत्रिकः = सभी क्षेत्रों वाला । कृषिक्षेत्रे = कृषि क्षेत्र में । नवीनाः प्रयोगाः = नये प्रयोग । संचारसाधनानि = संचार के साधन (यथा – दूरभाष , वायुयान इत्यादि) । उत्कृष्टानि = उत्तम । अन्तरिक्षक्षेत्रेऽपि (अन्तरिक्षक्षेत्रे + अपि) = अन्तरिक्ष क्षेत्र में भी । विशिष्टम् = विशेष । स्वास्थ्य प्रति = स्वास्थ्य के प्रति । जनजागरणम् = जन – जागरूकता । चिकित्सासुविधानां=चिकित्सा सुविधाओं की । वृद्धिः = बढ़ोत्तरी । सर्वशिक्षाभियानम् = विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में उत्थान के लिए चलाया गया कार्यक्रम । इत्यादीनि = इत्यादि । उल्लेखनीयानि = उल्लेखनीय । सर्वथापि (सर्वथा + अपि) = सभी प्रकार से । अग्रगण्येषु = अग्रगण्यों में । गणनीयः = गणना – योग्य ।

व्याकरणम्

सन्धि – विच्छेदः –

हिमाद्रेश्चैव =हिमाद्रेः च + एव (विसर्ग सन्धि , वृद्धि सन्धि) । अत्रैव = अत्र + एव (वृद्धि सन्धि) । योऽभिनिवेशः = यः + अभिनिवेशः । नासीत् = न + आसीत् (दीर्घ सन्धि) । अन्यदेशेष्वपि = अन्यदेशेषु + अपि (यण् सन्धि) । विज्ञानेऽपि = विज्ञाने + अपि (पूर्वरूप सन्धि) । अन्तरिक्षक्षेत्रेऽपि = अन्तरिक्षक्षेत्रे + अपि (पूर्वरूप सन्धि) । सर्वथापि = सर्वथा + अपि (दीर्घ सन्धि) ।

प्रकृति – प्रत्यय –

विभागः प्राहुः = प्र + √ब्रू लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन
कथ्यते =√ कथ + यक् कर्मवाच्य , प्रथम पुरुष , एकवचन
बभूव =√भू लिट् लकार (परोक्षभूत) , प्रथम पुरुष , एकवचन
जातः =√जन् + क्त पुंल्लिंग , एकवचन
चिन्तनम् =√चिन्त + ल्युट् आसीत् अस् लङ्लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
व्यापकता = वि +√ आप् + ण्वुल् + तल् (ता) आनयत् = आ +√ नी + लङ्लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
प्राचीनकाल=प्राचीनकालतः + तसिल् (तः)
वर्धितवन्तः=√वृध् +णिच् क्तवतु , बहुवचन
विस्मरणीयम्= वि +√स्मृ + अनीयर् , नपुंसकलिङ्ग न विस्मरणीयम् =अविस्मरणीयम् (नञ् समास)
दृश्यते =√दृश् + यक् (य) प्रथम पुरुष , एकवचन (कर्मवाच्य)

https://www.evidyarthi.in/

कृतम् =√कृ + क्त नपुंसकलिङ्गः , एकवचन
करोति =√कृ लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन गन्तुम्=√ गम् + तुमुन्
इच्छति =√इच्छ लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन गच्छन्ति=√ गम् लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन मन्यन्ते
=√मन् + यक् (य) लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन (कर्मवाच्य)
कथ्यन्ते =√कथ् + यक् लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन (कर्मवाच्य)
पूज्यन्ते =√पूज् + यक् लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन (कर्मवाच्य)
निर्मान्ति =निर् + √मन् लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन
क्रियन्ते =√कृ + यक् लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन , कर्मवाच्य
अधीयन्ते = अधि + इङ् + यक् लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन (कर्म)
प्रारभत =प्र . आ + √रभ् लङ् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
गता =√ गम् + क्त , स्त्रीलिङ्ग , एकवचन
दर्शयन्ति=√ दृश + णिच् , लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन
वर्तते =√वृत् लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन (आत्मनेपदी)

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/